तब प्रभु सीतहि बोलाई पठाई। यह सपना मै कहौं पुकारी। होइहै
सत्य गये दिन चारी। तासु बचन सुनि ते सब डरी। जनकसुता के
चरनन्ह परी॥ दोहा॥ जहँ तहँ गईं सकल तब सीता के मन सोच॥
२ मास दिवस बीते मोहि मारिहि निसिचर पोच॥१३॥ चौपाई॥ त्रिज
टा सन बोली कर जोरी॥ मातु बिपति संगिनी मोरी। तजौं दे
ह करु बेगि उपाई। दुसह बिरहु अब सहन जाई॥ आनि काठ रचु १
चिता बनाई। मातु अनल पुनि देहु लगाई॥ सत्य करहु मम
प्रीति सयानी। सुनै को श्रवन सूल सम बानी॥ सुनत बचन
पद गहि समुझाई। प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाई॥ निसि न अ
नल मिलि सुनु सुकुमारी। अस कहि सो निज भवन सिधारी
॥ कह सीता बिधि भा प्रतिकूला। मिलै न पावक मिटै न सूला
॥ देखियत प्रगट गगन अंगारा। अवनि न आवत एकौ तारा॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

वरौ

...व अस प्रमान पन मोरा॥ चंद्रहास हरसम परतापा॥ रघुप
ती बीरह अनल संजापा॥ सीतल नीसीत बहसी बर धारी॥ कहसीता
हरु मम दुष भारी॥ सुनत बचन पुनी मारन धावा॥ मयतनया
कहि नीती बुझावा॥ कहीसी सकल नीसीचरीनी बोलाई॥ सीतही बहु
बि धी त्रास हु जाई॥ मास दीवस महु जो कहा न माना॥ नाही तो मै मार
ब काढी कृपाना॥ दोहा॥ भवन गया दसकंधर ईहा पीसाचीनी बृंद
॥ सीतही त्रास देखावै धरही रूप बहु मंद॥ १२॥ चौपाई॥ त्रीजटा नाम
नीसाचरी ऐका॥ राम चरन रती नीपुन बीबेका॥ सभन बोला
ई सुनाऐसी सपना॥ सीतही सेई करहु हीत अपना॥ सपने बांदर
लंका जारी॥ जातुधान सैना सब मारी॥ षर आरूढ नगन दस
सीसा॥ मुंडीत सीस षंडीत भुज बीसा॥ ऐही बीधी सो दछीन दीसी
जाई॥ लंका मनहु बीभीषन पाई॥ नग्र फीरी रघुबीर दोहाई॥

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

१

दुषभागे॥भागीभौंअवयेनहैमनलाई॥आपहीतेसवकछुआसन
ई॥अववनसमीपप्रभुतकथासुनाई॥कहीसोप्रगटहेसीवकोप्र
ई॥तवहनोमसानीफकहुचलीआये॥कौरीथैठीमनवीसमैपाये॥अ
वभैरामदूतमातुजा॥जैकौ॥सैसैस्यतफनुबानीध्यानफी॥ग्रहण
हीकामातुमैआनी॥हीनरामतुमैसहीजानी॥जरवंदूरसंगाती
॥८॥ कहुकैसे॥कहीफथासंगातीजयेजैसे॥ दोहा॥कपीकेवचनसप
प्रेमकृतीकृपजामनवीश्वास॥जानामनक्रमवचयहकृपासींधु ॥८॥
करचस॥हरीजनजानीप्रीतीअतीयाही॥सजनतथेनपलका
वनीगाही॥वडतवीह्रजलहनेमाता॥भयेहुतातमोकजाल
थअमाता॥अवकुक्रसनजाइयलीहारी॥अनुजसहीतसमजाह
वरारी॥कोपलचीतकृपानरघुराई॥कपीकेहीहुचरांनीनाई

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

पावोनमैलसीग्रुचहीनग्रभागी॥ जानतमोहीग्रमग्रभागी॥ छ
नेषीनैमभचीरूपग्रसोका॥ सतीनामतुमहनुमंसका
ग्रांजुंतंत नंकिंसलैमानेषीसांकुं॥ कावनेमांसमींनींसंमां
कों॥ ग्रजुकेतनकीसलैमाकषीसांकु॥ देकुग्रगीमीकीजयकनु
नीषक॥ देषीषकपीग्रमचीयाकुलसीता॥ तेहीहूंनकपीष
ष्पसभवीता॥ सोरठा॥ कपीकेहूदैचीचारदीनमुदीकाडारी
तव॥ ग्रानीग्रसोकग्रंगारकेंठीकरगहेउ॥ १५॥ चोपई॥ देखीपरमु
कग्रमभनोहर॥ रामनामभ्रतीसैग्रतीसुंदर॥ चकीतचीतैमुद्रि
पहीचानीह्रदयवीषादहैग्रकुलानी॥ जीतीकोसकेग्रजेयरघुरा
इ॥ मायातीग्रस [illegible]॥ [illegible]॥ मधुरब
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham
चनवोलेहजोमाना॥ रामचंद्रगुनवरनईलागे॥ सुनतैसीतापकर

रथ्य भएऊं माता॥ आसक होन बअमोघ बीख्याता॥ सुनहु मातु मैं अ
तीसै भुषा॥ लागी देखी सुंदर फल रुषा॥ सनु सुत करही बीपीन रष
वारी॥ परम सुभट रजनीचर भारी॥ तीन्ह के भै मातु मोही नाही॥ जौं तुम
सुष मानहु मन माही॥ दोहा॥ देषी बल बुधी नीपुन कपी कहा जानुकी
जाहु॥ रघुपती चरन हृदै धरी तात मधुर फल षाहु॥१७॥ चौपाई॥ चले
१० नाई सीर पैठेउ बागा॥ फल षाये तरु तुरन लागा॥ रहे तहां बहु भट रषवा
३ रे॥ कछु मारे कछु जाइ पुकारे॥ नाथ आये एक आवा कपी भारी॥ ती
न्ह असोक बटीका उजारी॥ षाये फल अरु बीटप उपारी॥ रच्छक म
र्दी म्रदी महि डारी॥ सुनी रावन पठवे भट नाना॥ ताही देषी गर्जा ह
नोमाना॥ सब रजनीचर कपी संघारे॥ गये पुकारत कछु अधमा
रे॥ पुनी पठयो तेही अछकुमारा॥ चला संग लै सुभट अपारा॥ आवत
देषी बीटप गही तरजा॥ ताही नीपाती महाधुनी गरजा॥ दोहा॥ क

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

नाहीमैपाई॥कछुकदेवसजननीधरुधीरा॥कपीन्हसंगअ
ईहैरघुबीरा॥नीसीचरमारीतुम्हैलैजैहैं॥तेहुपुरनारदआदीजसु
गैहैं॥हैंसुतकपीसबतुम्हैसमाना॥जातुधानअतीभटबलवी
ना॥मोरेहृदैअतीपरमसंदेहा॥सुनीकपीप्रगटकीननीजदेहा॥क
नकभूधराकारसरीरा॥समरभयंकरअतीबलधीरा॥सीतामन
भरोसातबभयेऊ॥पुनीलघुरूपपवनसुतलयेऊ॥दोहा॥सुनुमा
तुसाखामृगनहीबलबुधीबीसाल॥प्रभुप्रतापतेगरुडैखाईपरम
लघुब्याल॥१६॥चौपाई॥मनसंतोषसुनीकपीबानी॥भगतीप्रता
पतेजबलसानी॥आसीषदीन्हरामप्रीयाजाना॥होहुतातबलसील
नीधाना॥अजरअमरगुननीधीसुतहोहु॥करहुबहुतरघुना
येकछोहु॥करहुकृपाप्रभुअससुनीकाना॥नीरभरप्रेममगनहनुमा
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham
ना॥बारबारनायेपदसीसा॥बोलेबचनजोरीकरकीसा॥अबकृत

तनय रद्दा॥
हीमे मारा॥ तापर बांध्यो तनै तुम्हारा॥ मोहीं नहीं कछु बांधे की ला-
जा॥ कीन्ह चहौं निज प्रभु कै काजा॥ बीनती करे जोरि कर रावन॥ सुनु मा
हु मान तजि मोर सीखावन॥ देखहु तुम निज कुलहि बीचारी॥ भ्रम
तजि भजहु भगत भयहारी॥ जाके डर अति काल डेराई॥ जो सुर
असुर चराचर षाहि॥ तासों बैर कबहु नहीं कीजे॥ मोरे कहे जानकी
१२ दीजे॥ दोहा॥ प्रनीतपाल रघुनायक करुनासींधु खरारी॥
4. गये सरन प्रभु राषिहें सब अपराध बीसारी॥ २४॥ चौपाई॥ राम च
रन पंकज उर धरहू॥ लंका अचल राज तुम करहू॥ रिषी पुलस्ति
जस बीमल मयंका॥ तेही ससि महु जनि होहु कलंका॥ रामनाम
बीनु गीरा न सोहा॥ देषु बीचारी त्यागि मद मोहा॥ बसन हीन
नहीं सोह सुरारी॥ सब भूषन भूषित बर नारी॥ राम बि-
मुख संपति प्रभुताई॥ जाइ रही नहि पाई जीन तो कै पा
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

मारेसी सुर केही अपराधा ॥ कहु सठ न तोहीं प्रान कै बाधा
व नम्रहमांड नीकाया ॥ पाये जासु बल बीरंचीत माया ॥ जाकें
बल बीरंची हरी ईसा ॥ पालत स्रीजत हरत दससीसा ॥ जा बल सीस धरत सहस्र
सानन ॥ अंडकोस समेत गीरी कानन ॥ धरै जो बीबीध
देह सुरत्राता ॥ तुम से सठन सीखावन दाता ॥ हर कोदंड कठीन जेही
भंजा ॥ तेही समेत नृप दल मद गंजा ॥ खर दूषन त्रीसीरा अरु
बाली ॥ बधे सकल अतुलीत बलसाली ॥ दोहा ॥ जाके बल लवले
स ते जीते चराचर झारी ॥ तासु दूत मैं हो जाके हरी आने प्रीया नारी ॥ चौ
पाई ॥ जानो मैं तुम्हारी प्रभुताई ॥ सहस्रबाहु ते परी लराई ॥ सम
र बाली ते तुम जस पाया ॥ सुनी कपी बचन बीहसी बीहरावा ॥ खाये
उं फल मोही लागी भुखा ॥ कपी सुभाव ते तोरे रुखा ॥ सब के दे
ह प्रीय स्वामी ॥ मारही मोही कुमारग गामी ॥ जीन मोही मारा ते मैं मारे
मोही
CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham
सबकी

५

नुपप देखौ कुसल नृ पुरुष ॥ जैसु पपीन त्रानीत नपरद्धे ॥
॥ दोहा ॥ नवल नगी कुस लनबीय कह लपजेनबीघ्रमा ॥ नवल
गी गजनी गपनपनी सोपत्याम सकामतजी कामा ॥ ४४ ॥ ग्रीपद
नवल नगी है सत दयनाम ॥ नेम मह मद नयेपली माल
॥ त्रायनगी ईरलवमत रघुनाथ ॥ धरे चाप सये फकरी
नुनी माथा ॥ समताब मुल सब्रपी करी ॥ नाज देस उपरलो
कलुकरी ॥ नगी सपनती परजनमाही ॥ नवलनगी प्रभप्र
तापप्रलीत ही ॥ अब भये कुसल नवप्रमोमारे ॥ देखौ रामपल्ल
नलु ... जाय स्नजफुलो ॥ ताहीन ध्यावैकी
... नी मै ... ॥ मेजी सीय नै प्रतीत्र धमल भाई ॥ सनाम्रना
... नीलन ... ॥ सोताइ नपमली ... नन वाला ॥ तेप्र जे
... मनमो मीलगावा ॥ दोहा ॥ सुने मन याप मन पीतम

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

...तन कम्र नुज लोचन ॥ स्याम गात प्रभुत मै मोचन ॥ नवे मनौ
नीपक [illegible] तागातौ ॥ [illegible] धीरज धारी मे कैम्ह दुबानी ॥ ना [illegible]
ननकर कैं मूज [illegible] ती ॥ [illegible] सर्व समाज कहु सुरत्राता ॥ सहजे प
[illegible] सेहौं ॥ न [illegible] पर संदेही ॥ दोहा ॥ प्रभु तन सुजन सकती
[illegible] मै भीर ॥ [illegible] ही [illegible] भुवन [illegible]
[illegible] ॥ ४८ ॥ चौपाई ॥ [illegible] सक [illegible] देखी ॥ सुरत [illegible]
[illegible] सिद्धौ ॥ [illegible] बन सखी [illegible] ॥ सुता [illegible]
[illegible] गाढ़ा ॥ [illegible] सखी [illegible] ॥ बोले वच
[illegible] मोहरी ॥ कहो [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] कुमारा ॥ [illegible] सहै [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ती ॥ [illegible] सब रीती ॥ [illegible]
ती ॥ [illegible] ॥ [illegible] पान

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

रस नन श्रीरघुराय ॥ तुम कृपाल सब संत सहित पतंगा ॥ भुजन समै
सुं० मनमय कार ॥ कहत नलमन मनुनाई ॥ सुग्रीव है कर गहि
नव प्रकाशा ॥ नेचु तप करजोग वीनो ता ॥ कहो सुजना
6 थ सतयु सम वाली ॥ सभु की वृष्टि प्रकट भी पाली ॥ सन
दुःखत सब पाही हरी क्रोधा ॥ जान राम प्रभु जना कृतजीवी
हनु रेखो ॥ श्री केवल रघुवीरन ताकि ॥ जदपी प्रकील नेपका
र उठि ॥ सीता कृपा प्रभु तुम अब करिहैही ॥ केरव प्रपा रघ्वा
१८ कहु के कछु वरिहैही ॥ जनक सुता रघुनाथहि दीजे ॥ अस कर प्र
भो रघुनाथ कीजे ॥ जब तो रस कहा है न वैदेही ॥ तब ते चरन प्रल
रु कौन सठ तोही ॥ जाइ कर न भीर चला सो तरक्षा ॥ कृपा सी कुर
घुनाथ के तहरा ॥ कर प्रनाम [illegible] आई ॥ राम कृप

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सेम मन मम सुष नेम कहीं नजाई ॥ मर सत देक मोत हीसत सा गरे
न सु प्रान लीक हेतु न कु जागर ॥ सु सु वचन कडी सागर पाही ॥
मा गा मम सुषकुं पान रघुवीर चरन जे होी ॥ सागर मन हा नीष
केन नाई ॥ मं ड म सत कर सीव गुह ॥ जीव वसथा षी यह भेप
ई ॥ ना चीं सीं षु वो ती पार हीं जाई ॥ मे वो धुस मीत वी भीष सन
के वी तैवी मं ती कर ठ लग ॥ कै ॥ स्तु नीष नेब बुक जारीन
बाहु ॥ मने वी लारी वही क वा ठी ॥ रा मम त तन दे न यक पती
॥ ना थ व चतु नु न नु सो वा ती ॥ वी हि सी वा मकर ले न गही
जा ॥ मवी वको सी वु लता गा कै बनाई ना ना ॥ देश ॥ न बम
सम हमा हैं जड़ ना की षत ने सेकु ल पी ती ॥ राम वी रे ध्य न कीर
मर नवी ... जा ती ॥ ५२ ॥ वो या है ॥ हे ई ... राम
ती ॥
मि न

CC-0: Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

बीरुमवलवेनुमनती ॥ हम्मीतमवेनीनीवीनवेह स्रा
शी ॥ सवल मवीतव. लेघ्रहेहि मुक ॥ ॥ वरनवंदीनिवु
नीचीसीचाग्रा ॥ चरनकव. नइुदेचवीसमवपावा ॥ स्री
तम सशलतप्रभुग्र जगनम्रीगवा ॥ दंद ॥ नीजमवना
हेमीचुर्ग्रीकुमती शीवहमायाहमतेमाये ॥ ग्रहचरी
तकलीभनहरननथामनी हम तुनसीगाये ॥ सम
हंमरे ह्लमा: नहसनकननमलीतमना ॥ वेह ॥ मकलसो
मंगल: चुनरकु नवेंकगनग्राम ॥ सादरमनहीतेत
सीनवग्रानाम वीचुतीनाभवनाम ॥ ६६ ॥ नेकाई ॥ श्री
...[illegible] नवेकनीकोवीच्चासल

मंदे॥ न ॥ प्र[illegible]श्रमा[illegible]प्रेतमभूतीगाई॥ कहहुवेगी
मैसैा[illegible] दोल॥ प्रनाथीजतिपहाकृपालप्रभका
8 ई[illegible] त रेपकी[illegible]टकत्रेमेकरीग्रेगाई॥ ६३॥ बो
बाई[illegible]नी [illegible]पेडेशे[illegible]भाई॥ नरीकाईके
कहीत [illegible]सुषपाई॥ तो[illegible]प्रतीगीरीभारे॥
इतरीहैत[illegible] अपूताघतुम्हारे॥ मेनुमूरेहेतघरीहेप्रभुताई
॥ करीहै[illegible]भूमानसोहाई॥ ग्रेगीधीधीनाथपघोनी
धीवधुगाई॥ त्रेतितिश्च्रासतीहुलोकगाई॥ जोहीसरप्रभके
तसंडवासी॥ हतहुना यबलगनप्रदवासी॥ सबकीकृ
पा[illegible]गारन[illegible]धीरा॥ तुरतहि हरहु[illegible]मनकीपीरा॥ ६

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham